



वर्श्व मलेरया रपौरट 2019

परीलमिस के लयि:

वर्श्व मलेरया रपौरट 2019

मेन्स के लयि:

स्वास्थय संबंधी मुददे

चरचा में क्यौं?

हाल ही में वर्श्व स्वास्थय संगठन द्वारा वर्श्व मलेरया रपौरट 2019 जारी की गई है।

परमुख बदि:

- रपौरट के अनुसार वर्श्व भर में कुल 228 मलयिन मलेरया के मामले सामने आए हैं।
- इनमें 93% मामले अफरीकी क्षेतर में, 3.4% दक्षणि पूरवी एशयाई क्षेतर में और 2.1% मामले पूरवी भूमध्यसागरीय क्षेतर में पाए गए हैं।
- वर्श्व भर में मलेरया के कुल मामलों का लगभग 50% केवल 6 देशों में पाए गए।
- इनमें नाइजीरया (24%), कांगो (11%), तंजानया (5%), अंगोला (4%), मोजाम्बकि (4%) और नाइजर (4%) शामिल हैं।
- वर्ष 2015 से 2018 तक वैश्वकि स्तर पर मलेरया से प्रभावति देशों में केवल 31 देशों में मलेरया के मामलों में कमी आई है।
- 5 वर्ष से कम की आयु वाले बच्चे सबसे अधिक संवेदनशील पाए गए हैं।
 - आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2018 में मलेरया से होने वाली मौतों में 67% मौतें इसी आयु वर्ग में हुई हैं।

भारत के संदरभ में:

- रपौरट के अनुसार, उच्च बोझ से उच्च प्रभाव (High Burden to High Impact-HBHI) की सूची में शामिल देशों में भारत और युगांडा ने वर्ष 2018 में मलेरया के मामलों में उल्लेखनीय कमी आई है।
 - वर्ष 2017-18 के बीच अफरीका और भारत में मलेरया के मामलों में सबसे अधिक गरिावट दर्ज की गई, फरि भी मलेरया से होने वाली 85% मौतें यहीं हुई हैं।
- भारत में मलेरया की मामलों में वर्ष 2018 में वर्ष 2017 के मुकाबले 28% की कमी आई है।
 - इससे पहले 2016 और 2017 के बीच 24% की कमी दर्ज की गई थी।
- भारत वर्श्व में मलेरया से सबसे अधिक प्रभावति 4 देशों की सूची से बाहर हो गया है।
 - हालाँकि यह अभी भी सबसे अधिक प्रभावति 11 देशों की सूची में शामिल एकमात्र गैर-अफरीकी देश है।
- मलेरया के मुख्य वाहक परजीवी प्लाज़्मोडियम फाल्सीपेरम और प्लाज़्मोडियम वविक्स हैं।
- भारत में लगभग 47% मामलों में मलेरया का कारण प्लाज़्मोडियम वविक्स रहा है।

भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम:

- भारत में मलेरया के मामलों से नपिटने के लिए मान्यता प्राप्त सामाजकि स्वास्थय कार्यकर्त्ताओं (Accredited Social Health Activists-ASHAs) को विशेष प्रशक्षण दया गया है।
- [दुर्गम अंचलारे मलेरया नरिाकरण](#) (Durgama Anchalare Malaria Nirakaran- DAMaN) नामक पहल के माध्यम से मलेरया के प्रसार पर अंकुश लगाने तथा उसके नदिान और उपचार के लयि व्यापक प्रयास कयि गए हैं, इन प्रयासों के चलते बहुत ही कम समय में प्रभावशाली परिणाम भी

प्राप्त हुए हैं।

- 2017 और 2018 में मलेरिया से लड़ने के लिये घरेलू अनुदान को बढ़ाया गया है।
- [राष्ट्रीय वेक्टर जनति रोग नियंत्रण कार्यक्रम](#) के तहत बजटीय परियोजना को वर्ष 2017-18 के 468 करोड़ के बजट को बढ़ाकर 2018-19 में 491 करोड़ रूपए और 2019-20 में 1,202.81 करोड़ रुपए तक निर्धारित किया गया है।
- भारत सरकार ने वर्ष 2030 तक मलेरिया उन्मूलन का लक्ष्य निर्धारित किया है।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/world-malaria-report-2019>

